भारतीय रेल सेवा के विभिन्न अधिकारी अपने पेशे से कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ दिल से साहित्य, कला एवं संस्कृति के गहन उपासक भी हैं, यह समस्त रेल परिवार के लिए सुखद तथ्य है। 'रेल दर्पण' के 'पेशे से कुशल प्रशासक : दिल से हैं काव्य उपासक' स्तम्भ के अंतर्गत हम भारतीय रेल सेवा के ऐसे प्रथम श्रेणी अधिकारियों की चुनिंदा काव्य रचनाओं को अपने पाठकों के पठनार्थ प्रकाशित करते हैं, जो वर्तमान में रेलवे के महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक पदों के दायित्व का कुशलता के साथ निर्वाह कर रहे हैं। इस स्तम्भ की नवीनतम कड़ी के रूप में हम रेलवे बोर्ड के सदस्य यांत्रिक श्री हेमन्त कुमार, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी डॉ. रोशनी खुबचंदानी तथा उप मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. नरेंद्र कुमार देपाल की काव्य रचनाओं का प्रकाशन कर रहे हैं।

✍ प्रधान सम्पादक

अच्छे दिन

अच्छे दिन अब आएंगे, जनता को है आस,
सौ दिन में सरकार की, है तैयारी ख़ास।
है तैयारी ख़ास, कि कम होगी महंगाई,
अपने श्रम की मिले, सभी को उचित कमाई।
कह 'धाकड़' कविराय, पुकारें बच्चे-बच्चे,
सभी लगाएं आस, कि आएं दिन अब अच्छे।।

आएं मिल कर के सभी, करें राष्ट्र निर्माण,
जो भी अपना कार्य है, करें उसे प्रण-प्राण।
करें उसे प्रण-प्राण, चलो दारिद्रय मिटाएं,
शुचिता को हम सभी, ज़िंदगी में अपनाएं।
कह 'धाकड़' कविराय, प्रलोभन मन नहिं लाएं,
ऐसा हो संकल्प, तभी दिन अच्छे आएं।।

✍ हेमन्त कुमार
सदस्य यांत्रिक
रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली

गंदी बात

दिल से हैं कहते सभी, कहिए अच्छी बात,
कब किसको चोटिल करे, किसकी गंदी बात।
किसकी गंदी बात, किसी को देते गाली,
उससे पहले सोच, प्रदूषित होए हमारी।
कह 'धाकड़' कविराय, अजी अब निकलो बिल से,
बड़ा वही जो जोड़ सके लोगों को दिल से।।

मन में अपने देखिए, लोगों में भगवान,
जो ऐसा करता वही, है सच्चा इंसान।
है सच्चा इंसान, सभी में रावण होता,
और सभी में कहीं ना कहीं, रामहुं सोता।
कह 'धाकड़' कविराय, सुनहरे होंगे सपने,
छोड़ बुराई देख सकें अच्छाई मन में।

काफी समय से

कसक रहती है मन में काफी समय से,
क्यों दुखों की भरमार है काफी समय से ।

सारी दुनिया सुख मनाये पर फिर भी,
मेरा देश दुखी है काफी समय से ।

सारी अच्छी चीजें सारा अच्छा खाना खा रहे,
कीमत चुकाने वाले देश, काफी समय से ।

गरीब की झोपड़ी तरस रही है,
बच्चे बिलखें रोटी को, काफी समय से ।

भ्रष्टाचार, चोरी, घोटालों की बारिश,
गर्दिश में हैं तारे, काफी समय से ।

सरकारी राशन, नेता का भाषण,
देख-सुन रहा है भारत, काफी समय से ।

गर्मी में तपना, खेतों में खपना,
तड़पता है निर्धन, काफी समय से ।

मसीहों के आने का इंतज़ार करके,
है पसीने में तरबतर किसान, काफी समय से ।

पहनने को कपड़ा, खाने को रोटी, रहने को घर देंगे सबको,
ये वादे पे वादा किये जा रहे हैं, काफी समय से ।

कच्ची हैं सड़कें, कच्चे हैं वादे,
दुखी मन की सिसकी है, काफी समय से ।

क्या पता कब समय ये बदलेगा,
है, हमको भी पता नहीं, काफी समय से ।

✍ डॉ. रोशनी खुबचंदानी
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, पश्चिम रेलवे, चर्चगेट

नयी मंज़िल की ओर

कदीद सर्द मौसम में
बर्फ की चादर ओढ़कर
बर्फीली रात के बाद
सुबह को फिर दस्तक दी उसने
फिर जमीन से फूटा एक नया कोपल
बगिया में एक नयी कली मुस्काई
नव जीवन नव उमंग नव तरंग
ढेरों खुशियों के संग

काली और मनहूस रातों को मिटाते हुए
उगते सूरज की किरणों को लिये
पतझड़ को विदाई देते हुए
बहार आने की आशा लिये
सब कुछ भूल कर
चलो लो अपनायें नये आसमां को
नयी सुबह की सुनहरी धूप में
आशाओं की नयी किरणें लेकर

नयी आरजू के साथ, हसरतों का महल लेकर
आज फिर चले नयी उमंग के साथ
पीछे छोड़ उदासियों के साये
लो बढ़ चले, नयी मंजिल की ओर
नयी मंज़िल की ओर
नयी मंज़िल की ओर ।

✍ डॉ. नरेन्द्र कुमार देपाल
उप मुख्य चिकित्सा निदेशक, पश्चिम रेलवे, चर्चगेट